श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर, जयपुर
1 से 15 अगस्त 2026 तक बाजरे की खेती के लिए सुझाव

खरपतवार नियंत्रण

1. बिजाई के 3 से 4 सप्ताह बाद निराई व गुडाई आवश्यक है जो कि खरपतवार नियंत्रण तो करती ही है साथ ही नमी संरक्षण के लिए भी बहुत उचित उपाय है तथा पौधों की जड़ों तक उचित मात्रा में हवा का भी आवागमन हो जाता है।
2. अगर बिजाइ से पहले खरपतवार नियंत्रण के लिए रसायन का छिड़काव न किया हो तो बिजाई के 15 से 20 दिन के बाद टेम्बोट्रीओन 42 प्रतिशत SC शाकनाशी का 90 ग्रम सक्रिय तत्व 500 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

विरलन व खाली जगह भरना

1. फसल की अच्छी पैदावर के लिए खेत में पौधों की उपयुक्त संख्या बेहद आवश्यक है जो कि 60 से 65 हजार पौधे प्रति एकड़ बारानी स्थिति में तथा 75 से 80 हजार पौधे सिंचित स्थिति के लिए अनुमोदित है।
2. बिजाई के दो से तीन सप्ताह बाद अच्छी वर्षा होने पर विरलन करे तथा जहां कम पौधे हैं वहां पर खाली जगह भरे। पौधे से पौधे की दूरी 10 से 15 से.मी. रखें।

उर्वरक

सिंचित क्षेत्रों में 90 किलो नत्रजन एवं 30 किलो फॉस्फोरस प्रति हेक्टेयर देना चाहिए। प्रति हेक्टेयर बिजाई के 3 हफ्ते बाद फसल की छंटाई के समय तथा यदि बाजरे की फसल में जस्ते की कमी के लक्षण दिखाई दे तो 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट की छिड़काव करें। एक हैक्टेयर के लिए 2.5 कि.ग्र जिंक सल्फेट (21 प्रतिशत) प्रति कि.ग्र. यूरिया व 200 लीटर पानी का प्रयोग करें। जरूरत पड़ने पर 10–12 दिन के अंतर पर कम से कम 2–3 छिड़काव करें।

रोग प्रबंधन

1. वातावरण में अधिक नमी होने पर जोगीआ रोग का संक्रमण हो सकता है जिसमें पत्तियों की निचली सतह पर सफेद फफूंद जैसा रोयोंदार आवरण (स्पोरेन्जिया) दिखाई देता है। संक्रमण के शुरुआत में ही संक्रमित पौधों को खेत से निकालकर नष्ट कर दे। यदि रोग की मात्रा सीमा स्तर (थ्रेशहोल्ड) से अधिक हो जाए तो प्रति हैक्टे. 500 ग्राम मैनकोजेब को 500 लीटर पानी में घोलकर बीजाई के 21 दिन बाद छिड़काव करें।

कीट प्रबंधन

1. सफेद लट

इसके प्रौढ भूरे व हल्के सफेद रंग के होते हैं जो मानसून की पहली वर्षा के बाद भूमि से शाम को अंधेरा होने पर निकलते हैं और आसपास के वृक्षों पर इकट्ठे होकर पत्तों को खाते हैं तथा सुबह होने से पहले वापिस जमीन में चले जाते हैं। इसकी लट अंग्रेजी के अक्षर सी के आकार की होती है। यह सफेट रंग की लट जिसका मुंह भूरे रंग का होता है बाजरे की जड़ों को काटकर अगस्त से अक्टूबर तक नुकसान करती है। ग्रसित पौधे पीले होकर सूख जाते हैं। कभी–कभी इस कीड़े का प्रकोप बाजरे की अगेती फसल (यदि मानसून पूर्व की बारिश हुई हो) में भी हो जाता है।

नियंत्रण एवं सावधानियां

1 वृक्षों पर इकट्ठे हुए प्रौढ कीटों को वर्षा के बाद पहली व दूसरी रात्रि को वृक्ष हिलाकर नीचे गिरा कर एकत्र करें व उन्हें मिट्टी के तेल के घोल में डालकर नष्ट कर दें। यदि यह कार्य अभियान चलाकर किया जाये तो सर्वोत्तम है।

2. प्रौढ कीटों को मारने के लिए पहली दूसरी व तीसरी वर्षा होने के बाद उसी दिन या एक दिन बाद खेतों में खड़े वृक्षों पर 0.04 प्रतिशत इमिडा क्लोरोप्रिड 17.8 SL 1.5 मि.ली./लीटर या क्विनलफोस 25 ई.सी 2 मि.ली प्रति लीटर पानी का छिड़काव करें।

फॉल आर्मीवर्म

यह प्रमुख रूप से मक्का का सर्वाधिक हानिकारक कीट है। लेकिन इसका आक्रमण बाजरा की फसल में भी देखने को मिल रहा है। फॉल आर्मीवर्म आक्रमण की पहचान पत्तों पर लम्बे या गोल से आयताकार कटे–फटे छिद्रों द्वारा होती है तथा इसकी छोटी–बड़ी मटमैले रंग की सूण्डियां पौधों की गौभ को खाती हुई मिलती है।

नियन्त्रण एवं सावधानियाँ

- फाल आर्मीवार्म की निगरानी के लिए. में 12 प्रति हैक्टे. में 5 फेरोमोन ट्रैप लगाएं।
- बड़ी सुण्डियों को हाथ द्वारा एकत्र कर मार दें।
- साप्ताहिक अवधि पर ढाई ट्राइको कार्डए जिसमें 50000 परजीवीकृत अण्डे हो, खेत में विभिन्न पौधों पर लगाएं।
- इस कीट के लिए 5 प्रतिशत प्रकोप होने पर 5 प्रतिशत नीम बीज घोल या 1 लीटर अजाडीरेक्टिन 1500 पी.पी.एम. प्रति हैक्टे. की दर से 500 लीटर पानी में मिलाकर छिड़कें।
- खेत में 10–12 प्रतिशत पौधों पर या उससे अधिक आक्रमण होने पर केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड एवं पंजीकरण समिति के द्वारा इस कीट के लिए मक्का की फसल में पंजीकृत कीटनाशक जैसे क्लोरेनट्रानिलीप्रोल 47.85 प्रतिशत एस.सी 60 मि.ली. प्रति हैक्टे. या स्पाईनटेरोम 11.7 एस.सी. 250 मि.ली. प्रति हैक्टे. या फ्लूबेंडायमाइड 20 प्रतिशत डब्ल्यूजी 250 ग्राम/हैक्टे. में से किसी

एक कीटनाशक को 500 लीटर पानी में मिला कर गोभ में छिड़काव करें। इस कीट के नियंत्रण के लिए मक्का की फसल में उपरोक्त कीटनाशकों की सिफारिश की गई है तथा जरूरत होने पर इनका इस्तेमाल किया जा सकता है।

बालों वाली सूण्डियां

इस कीट की सूण्डियां छोटी अवस्था में होती है तो ये इकट्ठी रहकर पत्तों की निचली सतह पर नुकसान करती है तथा पत्तों को छलनी कर देती है। ये इधर–उधर अकेली घूमती रहती है तथा पत्तों को खाती है। इनकी दो प्रजातियां हे, बिहार हेयरी केटरपिलर व रैड हेयरी केटरपिलर लाल बालों वाली सूण्डिया जुलाई के दूसरे पखवाड़े से अगस्त माह के अन्त तक सक्रिय रहकर नुकसान करती है। दूसरी प्रजाति की बालों वाली सूण्डी अगस्त से फसल की पकाई तक नुकसान करती है।

नियन्त्रण एवं सावधानियां

- लाल बालों वाली सूण्डियों के प्रौढ (पतंगे) रोशनी की तरफ आकर्षित होते हें। पहली बारिश के उपरान्त एक माह तक लाइट–ट्रैप का उपयोग करें।
- खेतों के आसपास खरपतवारों को न रहने दें क्योंकि ये कीड़े उन पर अण्डे देते हैं।
- कीटों के अण्ड–समूह को नष्ट करें।
- पत्तों को छोटी सूण्डियों सहित तोड़ लें तथा ऐसे पत्तों को जमीन में गहरा दबा दें या मिट्टी के तेल के घोल में डालकर इन्हें मार दें।
- बड़ी सूण्डियों को कुचलकर नष्ट कर दें अन्यथा मिट्टी के तेल के घोल में डालकर नष्ट करें।
- बड़ी सूण्डियों की रोकथाम के लिए 750 मिली. क्विनलफास 25 ई.सी. को 500 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हैक्टेयर छिड़कें।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नंबरों पर संपर्क करें

9408660365–वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष 8504920051–शस्य विज्ञान वैज्ञानिक 7742724624–पौध संरक्षण वैज्ञानिक

कृषि विज्ञान केन्द्र, गोनेड़ा, कोटपूतली

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर, जयपुर